सम्पादकीय

उड़ीसा से पंजाब के लिए आ रहे संकेत ...

उड़ीसा में चर्च ने वहां के जनजाति क्षेत्र के लोगों ं को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। कंधमाल जिला में पिछले कई दिनों से हिंसा फैली हुई है। उड़िया भाषा के एक अखबार ने तो खबर दी है कि लगभग 4 हजार ईसाइयों ने उड़ीसा के एक गांव में निहत्थे ग्रामीणों पर आक्रमण कर दिया। इन ईसाइयों के पास बढ़िया किस्म के हथियार भी थे। इन्होंने ग्रामवासियों के 200 घरों को आग भी लगा दी। ऐसा कहा जाता है कि उड़ीसा के चर्च को विदेशी शक्तियां धन भी मुहैय्या करवाती हैं और रणनीतिक कोशल भी। जिसका अर्थ यह हुआ कि चर्च की यह योजना विदेशी धन और विदेशी नीति के बलबूते ही बनती है। सोनिया गांधी के भारत में आने के बाद चर्च का साहस ओर भी बढ़ा है। उड़ीसा का जिक्र यहां इसलिए किया जा रहा है क्योंकि चर्च ऐसा अभियान पंजाब में भी पिछले कुछ सालों से बड़ी तेजी से चला रहा है। कुछ साल पहले शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने कुछ कर्मचारियों को सेवा मुक्त किया था। चर्च तुरंत उनके पास पहुँच गया और उनको आर्थिक सहायता प्रदान करने का आश्वासन इस आधार पर दिया गया कि वे ईसाई धर्म को स्वीकार कर लें। उनमें से कुछ ने ऐसा किया भी। इसका अर्थ यह हुआ कि चर्च पंजाबियों को उनकी धरती से तौड़कर लालच अथवा वैयक्तिक लाजल के आधार पर अपने खेमे में शामिल करने का प्रयास कर रहा है। यदि यह केवल ईश्वर को जानने की यात्रा होती तो शायद किसी को आपत्ति नहीं होती। परंतु चर्च ईश्वर मार्ग की यात्रा कम कर रहा है और उसका जोर अपने सदस्यों की संख्या बढ़ाने में ज्यादा है। प्रश्न यह है कि आखिर चर्च अपने चेलों की संख्या किस उद्देश्य के लिए बढ़ा रहा है? चर्च का यह अभियान पंजाब में कोई नया अभियान नहीं है। महाराजा रणजीत सिंह के बेटे दिलीप सिंह को चर्च ने ईसाई मत में दीक्षित करने में अतिरिक्त उत्सुकता दिखाई थी। अर्थात् चर्च एक लंबी रणनीति के अंतर्गत कार्य कर रहा है। पंजाब में उसके निशाने पर अनुसूचित जाति के लोग हैं। जालंधर और होशियारपुर में अनेक गांवों में चर्च ने दो या तीन लोगों को अपने संप्रदाय में दीक्षित कर लिया है और विदेशी पैसा मुहैय्या करवाकर वहां गिरिजाघर भी स्थापित कर रहा है। लगता है वह गांव-गांव में गिरिजाघर स्थापित करना चाहता है।

चर्च की पद्धति केवल अपने सम्द्राय या ईसा मसीह के उपदेशों का प्रचार करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह भारतीय महापुरूषों के प्रति गाली गलोच भी करना है और उनके प्रति अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल भी करता है। लेखक के पास अभी हाल ही में नेपाली भाषा में चर्च की ओर से प्रकाशित एक ऐसी पुस्तक पहुँची है जिसमें दस गुरू परंपरा के प्रथम गुरू श्री नानक देव जी पर प्रहार किया गया है । उनकी निंदा ही नहीं की गई बल्कि यह भी कहा गया है कि उनके रास्ते पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। उनका रास्ता सच का रास्ता नहीं है झूठ का रास्ता है। ऐसी ही एक पुस्तक जो चर्च ने काफी पहले प्रकाशित की थी। उसमें ईसाई प्रचारकों से इस बात का आग्रह किया गया था कि वे केवल अनुसूचित जाति के लोंगों का ही मजहब परिवर्तन करवाने तक सीमित न रहे बल्कि बड़ी जाति के और जाट सिखों के मजहब परिवर्तन की ओर भी ध्यान दें। इसका अर्थ यह हुआ कि चर्च पंजाब में एक लंबी रणनीति के अंतर्गत काम कर रहा है। उड़ीसा में चर्च की यह नीति फ्लैश प्वाइंट तक पहुँच गई है । इसलिए वहां के लोगों ने अपनी संस्कृति और अस्मिता की रक्षा के लिए विद्रोह कर दिया है। पंजाब में अभी यह फ्लैश पाइंट तो नहीं आया है लेकिन गुरू भूमि और गुरू वाणी की अस्मिता बची रहे और बनी रहे इसके लिए अभी से चेतना होगा। उड़ीसा में व्याप्त असंतोष का पंजाब के लिए यही संदेश है।

- डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री